Bodhi-Path Year 2023 January Issue Volume 24 Page No 51-56

बौद्ध साहित्य में लोकतन्त्र का वर्णन

लिच्छिवी

पी–एच.डी.शोधार्थी

बौद्ध अध्ययन विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय ,दिल्ली,

पालि साहित्य में महाकारुणिक शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के सद्धर्मोपदेशों से प्रसूत है और भारत तथा अन्य देशों में भी त्रिपिटक एक अमूल्य धरोहर है। अन्य साहित्यों की भॉति बौद्ध साहित्य भी अद्वितीय है, तथा आकार की दृष्टि से काफी विशाल भी। पिटक, अनुपिटक, अट्ठकथा, काव्य, वंस, व्याकरण, आदि[1]। इन छः विभागों में विभक्त पालि–साहित्य का मूलाधार त्रिपिटक है। पिटक –*विनयपिटक,सुत्तपिटक,अभिधम्मपिटक*। अनुपिटक–*नेत्तिप्पकरण,पेटकोपदेस,मिलिन्दपन्ह*। अट्ठकथा–*समन्तपासादिका, सुमंगलविलासिनी, पपञ्चसूदनी, सारत्थप्पकासिनी, मनोरथपूरणी,परमत्थजोतिका* आदि। काव्य–(*जिनालंकार, जिनचरित, पज्जमधु, तेतलकटाहगाथा, सद्धम्मोपयन, पञ्चगतिदीपन , लोकनीति* आदि)। वंस–*दीपवंस, महावंस, महावोधिवंस, दाठावंस, सासनवंस, आनागतवंस, गन्धवंस* आदि। व्याकरण–, *सद्दनीति, कच्चायनव्याकरण, मोग्गल्लानव्याकरण,रूपसिद्धि, बालावतार,महानिरित्ति, वूलनिरुति* आदि। बुद्धवचनों के संकलन को त्रिपिटक के नाम अभिहित किया जाता है। अनुपिटक साहित्य पिटक की व्याख्या के रूप में या उसमें गति के लिए विरचित है। पालि साहित्य में बुद्ध और उनके शिष्यों के सद्धर्मोपदेश के साथ–साथ भारत के धार्मिक–दार्शनिक सिद्धान्तों के विवरण, विविध प्रकार कला, तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति, भौगोलिक परिस्थिति, सामाजिक रीति, तथा समाज के लोगों की अवस्था आदि का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है[2]।

बौद्ध–साहित्य में 'लोकतन्त्र' शब्द दृष्टिगोचर नहीं होता है, पर अर्थ को जानने के लिए हमें लोकतन्त्र की परिभाषा को जानना आवश्यक है। लोकतन्त्र एक व्यवस्था के नाम पर विश्व पटल पर उदित हुआ है। लोकतन्त्र का व्यापक अर्थ ग्रहण करने के कारण आज 'लोकतन्त्र' राजनीतिक व्यवस्था भर नहीं, अपितु वह एक विशेष प्रकार की जीवन–पद्धति का नाम बन गया है। इसके संकुचित अर्थ ग्रहण करके 'निर्दिष्ट लोकतन्त्र' के नाम पर लोकतन्त्र की दुहाई देते हुए देखे जा सकते है। लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र और जनतन्त्र समानार्थक है। यह लोकतन्त्र

[1] भरत–सिंह उपाध्याय, *पालि साहित्य का इतिहास, प्रयाग* : हिन्दी साहित्य सम्मेन,2000,पृ. 20,21,22.
2. वही.पृ.25

शब्द लोकतान्त्रिक व्यवस्था और लोकतान्त्रि राज्य दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। अनेकों राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों, व समाजशास्त्रियों ने 'लोकतन्त्र' को परिभाषित करने का प्रयास किया है। लोकतन्त्र को अंग्रेजी में डेमोक्रेसी कहते है। इस प्रकार लोकतन्त्र का अर्थ 'जनता का शासन' अथवा एक ऐसी शासन प्रणाली जिसमे सर्वोच्च सत्ता जनता है।

राजनैतिक व्यवस्था गणतन्त्र का भी है, जो प्राचीन काल के पालि–साहित्य में भी मिलता है। जहॉ शासनतन्त्र में सैद्धान्तिक रूप से देश का सर्वोच्च पद आम जनता में भी कोई व्यक्ति पदासीन हो सकता है, उस प्रकार के शासनतन्त्र को गणतन्त्र कहा जाता है, भारत एक लोकतान्त्रि गणराज्य है। बौद्ध–साहित्य में तत्कालीन भारत में किसी केन्द्रीय शासन व्यवस्था होने का उल्लेख नहीं मिलता है, उस समय भारत अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बटा हुआ था। जिनमें से कुछ राजतन्त्रात्मक और कुछ गणतन्त्रात्मक राज्य थे[3]।

पालि साहित्य में सोलह महाजनपदों का उल्लेख अंगुत्तरनिकाय[4] में मिलता है जिनके नाम, राजधानी और वर्तमान में नाम है ।

नाम	**राजधानी**	**वर्तमान के नाम**
1.अंग–	चम्पा	उत्तरी बिहार भागलपुर
2.मगध–	गिरिव्रज या राजगीर	पटना, गया तथा शाहाबाद
3.वज्जि–	वैशाली	बसाढ़ उ.बिहार मुजफ्फरपुर
4.काशी–	वाराणसी	बनारस
5.कोसल–	श्रावस्ती	सहेत–महेत (श्रावस्ती में)
6.मल्ल–	कुशीनगर	देवरिया
7.वत्स–	कौशाम्बी	इलाहावाद
8.कुरू–	इन्द्रप्रस्थ	मेरठ, दिल्ली, थानेश्वर
9.पांचाल–	उ.अहिच्छत्र,द.कम्पिल्य	रूहेलखण्ड के बरेली, बहदायॅु तथा फर्रूखावाद
10.अवन्ति–	महिष्मती तथा उज्जैन	मालवा व मध्य–प्रदेश
11.शूरसेन–	मथोरा	ब्रजमण्डल

[3] *अंगुत्तरनिकायपालि,*(सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.280.
[4] *प्राचीन भारत,* पाण्डे एस.के. ,इलाहाबाद : प्रयाग एकेडमी, 2007,पृ.189.

12.चेदि– सोत्थिवती बुंदेलखण्ड

13.मत्स्य– विराटनगर जयपुर

14.अश्मक–पोतना अथवा पोटिल गोदावरी नदी आन्ध्र–प्रदेश

15.गंधार– तक्षशिला पेशाबर तथा रावलपिण्डी

16.कम्बोज–राजपुर अथवा हाटक राजौरी और हजारा जिला

इन सोलह महाजनपदों में मगध, वत्स, कोसल एवं अवन्ति अत्यन्त शक्तिशाली थे[5]। इनमें भी मगध और अवन्ति ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इन महाजनपदीय राज्यों के नाम इनकी शासक जातियों के नाम पर पडे थे। पालि साहित्य में बुद्धकालीन भारत में कई गणराज्यों का भी उल्लेख मिलता है[6]। जो इस प्रकार है–

गणराज्य–नाम	राजधानी–नाम
1.सक्या(शाक्य)	कपिलवस्तु
2.भग्गों	शिशुमारगिरि
3.लिच्छवियों व वज्जिय	वैशाली
4.बुल्लिय	अल्लकप्पक
5.कोलिय	रामग्राम
6.मल्ल	पावा
7.मल्ल	कुशीनगर
8.मल्ल	काशी
9.मोरिया(मौर्य)	पिप्पलिवन
10.विदेह	मथुरा
11.कालाम	कंसमुत्त / केसपुत्त

[5] *मज्झिमनिकाय भाग*–2,(सम्पादक एवं अनुवादक), स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.898

[6] *प्राचीन भारत,* पाण्डे एस.के. ,इलाहाबाद : प्रयाग एकेडमी, 2007,पृ.189.

इन गणतन्त्रीय राज्यों के नाम भी राजतन्त्रीय राज्यों की भॉति इनके शासक जातियों के नाम पर पड़े थे[7]। राजतन्त्रीय राज्यों के शासक वंशानुगत होता था। जैसे–मगधराज बिम्बिसार का पुत्र अजातशत्रु मगध का उत्तराधिकारी राजा बना[8]। इसके विपरीत गणराज्यीय जातियॉ प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर शासन कार्य चलाती थी। ये गणराज्य जनपदीय राज्यों की अपेक्षा अधिक लोकतान्त्रिक हुआ करते थे, क्योंकि जनपद में सत्ता राजा के अधीन और गणतन्त्र में परिषद् के अधीन[9]। इन गणराज्यों में लोकतन्त्र का रूप दृष्टिगत होता है। भारत में गणतन्त्र प्रणाली प्राचीन समय से विद्यमान होने का दावा भले ही इन जैसे उदाहरणों से किया जाता रहा हो, पर वह एक प्रकार का कुलीनतन्त्र ही था, जिसमें सामाजिक व्यवस्था में श्रेष्ठ समझा जाने वाला विशेषाधिकार से युक्त वर्ग का होता था। इसमें सामाजिक समानता पर विचार नहीं किया गया था। गणसमूहों का प्रमुख वही होता था, जो समाजक्रम में अपनी श्रेष्ठता का दावा करने में समर्थ हो। यह गण समूहों की दुर्बलता का द्योतक है। यहाँ गण के निर्माण की इकाई कुल थी। प्रत्येक कुल का एक–एक व्यक्ति गणसभा का सदस्य होता था[10]। गणराज्यों में से शाक्य और लिच्छवी गणों का उल्लेख पालि साहित्य में सर्वाधिक हुआ है[11]।

महापरिनिब्बाणसुत्त में वैशाली में स्थित वज्जिसंघ के गणराज्य का संचालन लोकतान्त्रिक पद्धति से होने का एक सुन्दर और उत्कृष्ट झलक देखने को मिलती है। बुद्धकालीन वैशाली गणराज्य अत्यन्त वैभवशाली था[12]। इसलिए मगधराज अजातशत्रु उस पर चढ़ाई करना चाहता था। उस समय भगवान बुद्ध की आयु अस्सी वर्ष के लगभग थी। उस समय बुद्ध राजग्रह के गिध्रकूट पर्वत पर विहार कर रहे थे। इस बीच मगधनरेश अजातशत्रु अपने महामन्त्री वस्सकार को भगवान बुद्ध के पास भेजता है। वस्सकार (वर्षकार) भगवान के पास जाकर उनका संमोदन कर...एक ओर बैठकर ,भगवान बुद्ध को अवगत करवाता है कि मगधनरेश अजातशत्रु लिच्छवियों पर चढ़ाई करना चाहता है और वे बुद्ध का अभिमत जानना चाहता है। भगवान बुद्ध वर्षकार के साथ–साथ भिक्षु संघ और आनन्द को सम्बोधित कर सात अपरिहाणीय–धम्म कहे[13]। और जब तक वज्जिय और लिच्छविय इन अपरिहाणीय–धर्म का पालन करते रहेगें, तब तक इनकी वृद्धि ही समझना, हानि नहीं। वे सात अपरिहार्य–धम्म नित्नलिखित है–

1. वज्जी सम्मति के लिए बराबर बैठते हैं।
2. वज्जी एक साथ बैठते उठते तथा कर्तव्य को करते हैं।

---

[7] वही. पृ.890

[8] *मज्झिमनिकाय भाग–2*(सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.159.

[9] *अंगुत्तरनिकायपालि भाग–1*(तिकनिपात) (सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.169.

[10] *अंगुत्तरनिकायपालि भाग–2*(पंचकनिपात) (सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.434.

[11] गणराज्य, https//hi.wikpedia-org/s/4t5.

[12] *दीघनिकायपालि भाग–2,महावग्गो,* (सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2009, पृ.330.

[13] काश्यप जगदीश, *महापरिनिब्बान सुत्त* , दिल्ली : सम्यक् प्रकाशन ,2010.पृ.16

3. वज्जी अ–प्रज्ञप्त(गैर कानूनी) को प्रज्ञप्त नहीं करते, और प्रज्ञप्त का उच्छकद नहीं करते। अर्थात पुराने वज्जी धर्म को ज्यों का त्यों मानते है ।
4. वज्जी अपने बुजुर्गों का सत्कार, तथा गौरव करते है। उनको मानते हैं, उनकी पूजा करते है, तथा उनकी सुनने योग्य बातों को सुनते हैं।
5. वज्जी कुल–स्त्रियों, और कुल–कुमारियों को छीनकर ,जबरदसती नहीं बसाते।
6. वज्जी अपने चैत्यों का सत्कार, तथा पूजा करते है। उनके द्वारा किए गये दान को अनुरक्षण बनाये रखते है।
7. वज्जी अर्हतों की अच्छी तरह धर्मानुसार रक्षा तथा आवरण करते है, ताकि भविष्य में, अर्हत उनके राज्य में सुख से विहार करें[14]।

सात अपरिहाणीय–धर्मों की शिक्षा बुद्ध ने ही वैशाली के सारन्द चैत्य में विहार करते समय भेंट करने के लिए आये हुए लिच्छवियों को प्रदान किया था[15]।

महापरिनिर्वाण मल्लों के गणतन्त्र (गण–प्रजातन्त्र) कुसिनारा में हुआ। यहाँ उल्लेखनीय है भगवान बुद्ध गणतान्त्रिक पद्धति के प्रषंसक थे, उन्होंने जनकल्याणात्मक कार्य करने वाले राजन्त्र या राजा का भी विरोध नहीं किया। तथागत बुद्ध ने न केवल तत्कालीन गणतान्त्रिक राज्यों को जनतान्त्रिक मगधराज्य बनने की ओर अग्रसरित करवाया, बल्कि मगधनरेश बिम्बिसार, कोसलराज प्रसेनजित आदि। समसामयिक राजाओं को भी जनकल्याणात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित किया[16]। इसका प्रमाण हमें पालि साहित्य में मिलता हैं।

जिनका निराकरण बुद्धवाणी और जिनवाणी की संवाहिता स्वरूप पालि और प्राकृत साहित्य में दृष्टिगत होती है लोकतन्त्र को स्थापित करने के लिए सामाजिक समता जरूरी है । जिसका अधिगम हम पालि साहित्य के अनुशीलन से कर सकते हैं। लोकतन्त्र के विरोधी अनेक तत्व है, जिनमें प्रमुख है–जातिवाद, भाषावाद, धार्मिक कट्टरवाद और क्षेत्रवाद आदि । इन सारी मान्यताओं का खण्डन पालि साहित्य में देखा की स्थापना की दिशा में व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, त्रिपिटक में उसे उजागर किया गया है। धम्मपद[17] में मनुष्य को अपना और अपने संसार का विधाता बता, उसके स्वतन्त्रता की उद्घोषणा की गयी। धम्मपद की इस गाथा के अनुसार–

''येसं सम्बोधि–अंगेसु सम्मा चित्तं सुभावितं ।

---

[14] ज्ञानादित्य शाक्य, बुद्धोपदिष्ट सत्त–अपरिहानिया–धम्मा की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता, *निब्बान–बोधि* : रिसर्च जर्नल ऑफ रिलीजन, फिलोसफी एण्ड सोशल साईन्सस, 2015,वॉल्यूम 9,(सम्पादक)भिक्खु नन्दरतन थेर (सह–सम्पादक) ज्ञानादित्य शाक्य, कुशीनगर : कुशीनगर भिक्षु–संघ पृ.30.

[15] *दीघनिकायपालि भाग–2(महापरिनिब्बान सुत्त,)*(सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध भारती ,2008, पृ.169

[16] भरत–सिंह उपाध्याय, *पालि साहित्य का इतिहास,* प्रयाग : हिन्दी साहित्य सम्मेन,2000,पृ. 186.

[17] *धम्मपद,* भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुर : बुद्धभूमि प्रकाशन, 1993.पृ.30

आदान–पटिनिस्सग्गे अनुपादाय ये रता।

खीणासवा जुतीमन्तो ते लोके परिनिब्बुता।।'

अर्थात जिसका चित्त सम्बोधि–अंगों में भली भांति अभ्यस्त है, जो परिग्रह के परित्यागपूर्वक अपरिग्रह में रत हैं, चित्त–मैल से रहित ऐसे द्युतिमान पुरुष ही लोक में निर्वाण प्राप्त करते है[18]।

किसी भी बदलाव का प्रस्थान बिन्दु व्यक्ति का अपना मन होता है, जो व्यक्ति समाज में परिवर्तन तथा स्वस्थ लोकतन्त्र की स्थापना को वास्तविक आधार देता हैं। व्यक्तित्व के निर्माण में व्यक्ति का चित्त और सामाजिक परिवेश दोनों ही कारण है, किन्तु चित्त प्रमुख है। धम्मपद में कहा गया है–

''दुन्निग्गहस्स लहुनो यत्थ कामनिपातिनो ।

चित्तस्स दमथो साधु चित्तं दन्तं सुखावहं ।।''

अर्थात कठिनाई से निग्रह किए जा सकने वाले, शीघ्रगामी, जहॉ चले जानेवाला चित्त सुख देने वाला होता है[19]।

पालि साहित्य में मनुष्य के मन की जटिलता एवं गम्भीरता की ओर बार–बार ध्यान आकृष्ट करता है । परिवर्तन लाने के लिए पहले मन को परिवर्तन करना होगा। भारत एक प्रजातान्त्रिक गणराज्य है स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही अपने राष्टीय ध्वज पर महावग्ग में विद्यमान प्रतीक रूप धम्मचक्क को अंकित किया, बुद्ध के चतुर्दिक धर्मघोष के रूप में सम्राट अशोक के सिंह–स्तम्भ को अपनी राष्टीय मुद्रा बनाया, राष्टीय गणतन्त्र के रूप में 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय'[20] पालि सूक्ति को अंकित कर अपनी एतिहासिक महानता प्रकट की है।

---

[18] *धम्मपद,* भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुर : बुद्धभूमि प्रकाशन, 1993.पृ.30

[19] *धम्मपद,* भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुर : बुद्धभूमि प्रकाशन, 1993.पृ.16

[20] *महावग्गपालि,* धम्मगिरि–पालि–गन्थमाला, इगतपुरी : विपश्यना विशोधन विन्यास, 1998.पृ.25.